Song and Composition Credits:

सोया है इंसान – एम डी पल्लवी
सदियों से कंकाल सा – एम डी पल्लवी
जिसके हाथ में पावर – यलगार & एम डी पल्लवी
नहीं नहीं – यलगार
सगुना सगुना ओ मेरी सगुना – यलगार
भूल हो गई – एम डी पल्लवी
इंसान इंसान का नहीं रे – एम डी पल्लवी
ना कोई मकसद बचा है – एम डी पल्लवी
महीनेका अंत न होता – एम डी पल्लवी
आया हैआया है – एम डी पल्लवी
हमारा मन – यलगार
हुकुम को मैं – एम डी पल्लवी
सपने के – एम डी पल्लवी
नीज़ नीज़ – पारंपरिक लोरी
ना मैं कुछ हूँ और ना तुम कुछ हूँ – एम डी पल्लवी
गुरुजी मुझे क्षमा करो – यलगार
आज नहीं तो कभी नहीं – एम डी पल्लवी
जैसे तुम्हारे कल परसों बीते – यलगार & एम डी पल्लवी

यलगार सांस्कृतिक मंच

यलगार सांस्कृतिक मंच की स्थापना 2015 में बाबासाहेब अंबेडकर के उस दृष्टिकोण से प्रेरित होकर हुई, जिसमें उन्होंने राजनीतिक परिवर्तन से पहले सांस्कृतिक सुधार को आवश्यक माना। महाराष्ट्र के प्रगतिशील आंदोलनों से जुड़े इस समूह ने "अंबेडकरी शाहिरी जलसा" को माध्यम बनाकर हाशिए पर खड़ी जातिगत शोषित समुदायों की आवाज़ को बुलंद किया है।

यलगार कलाकारों और कार्यकर्ताओं को एक साझा मंच पर लाकर सांस्कृतिक सक्रियता को मजबूत करता है और अहिंसा, लोकतंत्र व मानवतावाद की संस्कृति को बढ़ावा देता है। उनके नाटकों में कहानी, कविता, गीत, व्यंग्य, इम्प्रोवाइज़ेशन, बाबासाहेब के भाषण और यलगार के सदस्यों के सामूहिक अनुभवों का संगम होता है।

महाराष्ट्र और इसके बाहर सक्रिय यह दल, हाशिए की आवाज़ों को सशक्त बनाने, समावेशकता को बढ़ावा देने और कला व सहयोग के माध्यम से सामाजिक परिवर्तन लाने के लिए कार्यरत है । "कवन" उनका प्रोसीनियम थिएटर में पहला प्रयास है।

नालंदा आर्ट्स स्टूडियो

नालंदा आर्ट्स स्टूडियो एक बेंगलुरु स्थित कला संगठन है, जो प्रदर्शन और ललित कलाओं के शोध, अध्ययन, प्रशिक्षण और अभ्यास पर कार्य करता है। यह विशेष रूप से एशिया, अफ्रीका और मिडिल ईस्ट के कलाकारों और समुदायों के बीच सहयोग को बढ़ावा देने पर केंद्रित है।

हमारी मेलिंग लिस्ट से जुड़ें

आने वाले शो, वर्कशॉप और अन्य
कार्यक्रमों की जानकारी पाने के लिए।

एनवाईयू अबू धाबी के आर्ट्स और ह्यूमैनिटीज़ द्वारा समर्थित, और द आर्ट्स सेंटर एट NYUAD द्वारा सह-कमिशन्ड।

NALANDA ARTS STUDIO &
YALGAAR SANSKRITIK MANCH
present

KAVAN

an ambedkarite opera

CO-COMMISSIONED BY THE ARTS CENTRE AT NYUAD

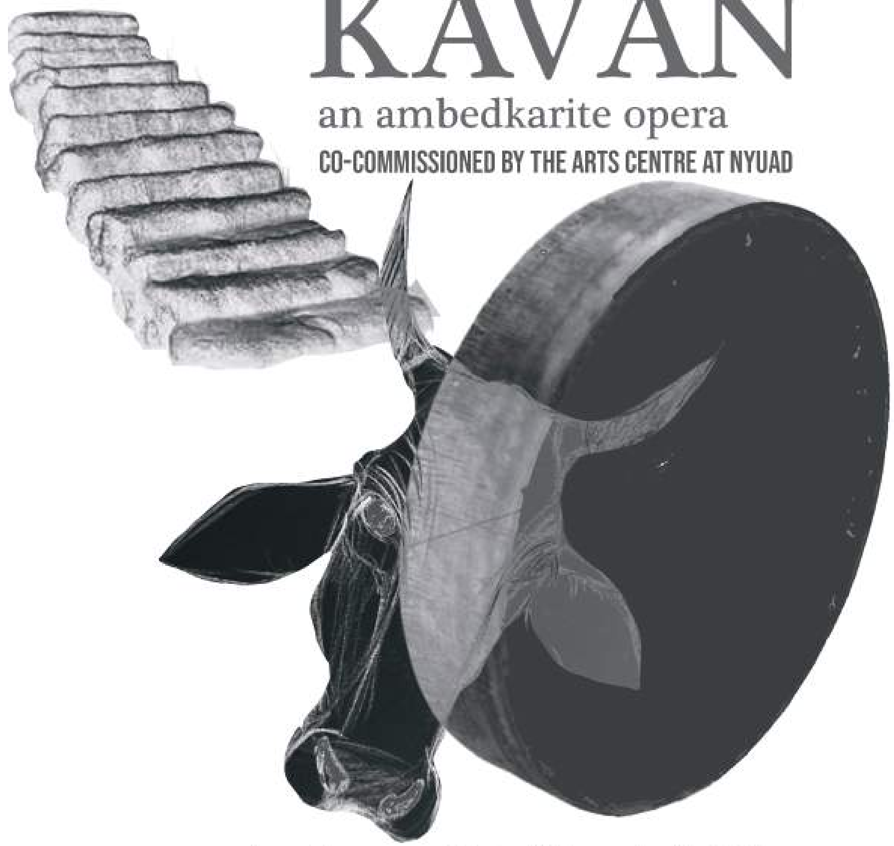

Story by
Sudesh Jadhav

Created & Performed by
The Ensemble

Directed by
Abhishek Majumdar

SUPPORTED BY NYU ABU DHABI Arts and Humanities

तेज़ी से बदलते हुए भारत में, युवा बेजुल और उसके आसपास के लोग जात, वर्ण और वर्ग की समस्याओं के बीच अपने सपने, आकांक्षाए और दुविधाएँ जीने की कोशिश कर रहे हैं। आज हम अपने चारों ओर बढ़ती महत्वाकांक्षा वाला, परंतु अनेक विरोधाभासों से भरा हुआ देश देख रहे हैं। 'कवन' में आंबेडकरवादी अनुभवों को लेकर तीखा व्यंग्य रचा गया है।'आंबेडकरी जलसा' की परंपरा को आगे बढ़ाते हुए इसे पूरी तरह से कविता और गीतों में प्रस्तुत किया जा रहा है। यह कलाकारों के वास्तविक जीवन-अनुभवों की प्रेरणा को रेखांकित कर रहा है।

निर्देशक का विचार

भारतीय संविधान का एक सबसे बड़ा विरोधाभास यह है कि जहाँ "छुआछूत" को भारत में प्रतिबंधित या अपराध घोषित किया गया है, वहीं "जाति" के अस्तित्व पर कोई प्रतिबंध नहीं है। जाति आधारित भेदभाव को समानता, स्वतंत्रता और बंधुत्व जैसी धारणाओं के लिए बाधा माना जाता है—वो धारणाएं जिन्हें महान बी.आर. आंबेडकर ने विशेष रूप से हमारे संविधान के लिए चुना था, यह स्पष्ट करते हुए कि इनमें से कोई भी एक दुसरे के बिना अमल नहीं जा सकता। लेकिन विडंबना यह है कि जब छुआछूत को अपराध घोषित करने का प्रस्ताव पारित किया जा रहा था, तब रोजाना जीवन में जातिगत वर्चस्व की प्रथा को अपराध घोषित करने के लिए संविधान सभा में कोई प्रस्ताव नहीं लाया गया था।

इस विरोधाभास को समझने के लिए, हमें उन विशिष्ट परिस्थितियों को समझना होगा जिनमें बाबासाहेब आंबेडकर को संविधान सभा के लिए चुना गया और जिन सीमाओं के भीतर रहकर उन्हें भारतीय जनता के लिए एक सार्थक संविधान तैयार करना पड़ा। लेकिन इससे भी महत्वपूर्ण बात यह है कि यह विरोधाभास यह दर्शाता है कि 'जाति' हमारे समाज में कितनी गहराई में मौजूद है। जाति आधारित विवाह, विशेषाधिकार और सामाजिक प्रथाओं को गैरकानूनी बनाने का विरोध केवल भारत के ग्रामीण क्षेत्रों तक सीमित नहीं है, बल्कि यह शहरों, उच्च पदों की नौकरियों, टेक कंपनियों में भी मौजूद है। यहां तक कि अमेरिका के पश्चिमी तट पे भी, जहां बड़ी संख्या में भारतीय लोग प्रमुख टेक कंपनियों में काम करते हैं, जातिगत भेदभाव के खिलाफ आवाज़ उठानी पड़ रही है।

यलगार सांस्कृतिक मंच वर्षों से समाज में उपस्थित जातिगत भेदभाव के खिलाफ सांस्कृतिक और सामाजिक हस्तक्षेप कर रहा है। मुंबई में स्थित यह आंबेडकरवादी समूह हाशिए पर पड़े समुदायों की आवाज़ को केंद्र में लाने का प्रयास करता है—चाहे वे धार्मिक, लैंगिक या अन्य अल्पसंख्यक हों, जिनकी आवाज़ को भारत की प्रचलित मूलधारा से बाहर रखा गया है।

यह आंबेडकरवादी ओपेरा एक निमंत्रण है—एक आत्मपरीक्षण करने का अवसर—जहाँ हम नागरिक, पर्यवेक्षक और सहभागी के रूप में अपने भीतर झांक सकें और समझ सकें कि दुनिया के सबसे बड़े लोकतंत्र में हम एक सामाजिक भेदभाव को लेकर किस तरह से जी रहे हैं। यह प्रस्तुति संगीत, हास्य, व्यंग्य और सामूहिक कथाकथन के माध्यम से इस प्रश्न को उठाती है।

कास्ट एंड क्रू

प्रस्तुति द्वारा: सिद्धार्थ प्रतिभावंत, प्रवीन मुक्ता, प्रियपाल दशांती, धम्मरक्षित रणदिवे, अमृता तोडरमल, अपूर्वा कदम
गीत और नाटक-पाठ: सिद्धार्थ प्रतिभावंत, सुधेश जाधव, प्रवीन मुक्ता, प्रियपाल दशांती, इरावती कर्णिक, धम्मरक्षित रणदिवे, अमृता तोडरमल, अपूर्वा कदम, अभिषेक मजूमदार
कहानी: सुधेश जाधव
निर्देशन: अभिषेक मजूमदार
संगीत निर्देशक, संगीत पर्यवेक्षक, संगीत संयोजक और ध्वनि डिज़ाइन: एम डी पल्लवी
संगीत संयोजन: धम्मरक्षित रणदिवे, सिद्धार्थ प्रतिभावंत
नाट्य संरचना: इरावती कर्णिक और जोसलिन क्लार्क
संगीत निर्माण, बैकग्राउंड स्कोर और ध्वनि डिज़ाइन: बैमबॉय
निर्माता और निर्माण प्रबंधक: वीणा अप्पैया
अंतरराष्ट्रीय निर्माण: वीणा अप्पैया और करिश्मा भगानी
कोरियोग्राफी: दिया नायडू
सहायक निर्देशक: नील सेनगुप्ता
सहायक निर्देशकगण: ऋतुपर्णा सान्याल और निकिता सिंह
लाइट डिज़ाइनर: निरंजन गोखले
मंच डिज़ाइनर: भूषण पाटील
वीडियो डिज़ाइनर: गौरव सिंह निज्जर
पोशाक डिज़ाइनर: अमृता तोडरमल
सहायक पोशाक डिज़ाइनर: भक्ती डांगे
मंच निष्पादन: विवेक जाधव
पपेट निर्माण: कपिल देव
पोस्टर डिज़ाइन: एम डी पल्लवी
निर्माण सहयोगी: प्रतीक पाटील, कैलास जाधव, विजय कांबले
शोध: द एंसेंबल और तन्वी शाह
अभिलेखागार और प्रचार डिज़ाइन: शुभम रॉय चौधरी
"कवन" फिल्म निर्माण: शुभम रॉय चौधरी और राहुल बचाटे
डॉक्यूमेंट्री फिल्म वर्कशॉप: सुरभि शर्मा
संगीत सहयोग: अब्दुल आसिफ, दुष्यंत देवरुखकर

हम न्यूयॉर्क यूनिवर्सिटी, ग्लोबल एशिया प्रोग्राम, ब्रह्मा प्रकाश, कोमिता धांडा, तोरल जतिन गजरावाला, बिल ब्रागिन, अवाम अमक्पा, मार्क स्विसलोकी, अवनीश मिश्रा, रंगशिला थिएटर ग्रुप मुंबई और निर्मिक कल्चरल सेंटर को धन्यवाद करना चाहते हैं |